षष्ठ अध्याय

" 'परिशिष्ट' उपन्यास : भाषा शैली का मूल्यांकन"

षष्ठ अध्याय

" 'परिशिष्ट' उपन्यास : भाषा-शैली का मूल्यांकन"

6.1 भाषा का स्वरूप :

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह समाज के अलावा रह ही नहीं सकता। समाज में रहते हुए व्यक्ति आपस में विचार-विनिमय करता है। विचार विनिमय के लिए माध्यम जरूरी होता है। भाषा के द्वारा व्यक्ति समाज को जानता है और अपने विचार समाज तक संप्रेषित करता है। व्यक्ति के विचार समाज तक संप्रेषित करने का सबसे बड़ा माध्यम साहित्य है। भाषा के द्वारा ही व्यक्ति अथवा समाज अपनी भावनाओं, अपनी मान्यताओं एवं विचारों को अभिव्यक्त करता है। अत: प्रत्येक रचनाकार भाषा के द्वारा ही अपनी साहित्य कृति को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करने का प्रयास करता है। डॉ. भाऊसाहेब परदेशी ने लिखा है- "कथा-साहित्य की भाषा जन-जीवन के निकट की भाषा होती है। साहित्य समाज का दस्तावेज है और कथा-साहित्य साहित्य का अभिन्न अंग है। उसमें भाषा के उसी स्वरूप की प्रधानता होगी, जिसमें कि वह रोजमर्रा की जिन्दगी बसर करता है, सांस लेता है और अपने तरीके से अपनी जिन्दगी का सलीब ढोता रहता है।"[1] अत: सफल भाषा वही होती है जो साहित्य कृति की कथा, काल और पात्रों के अनुरूप हो। वास्तव में भाषा वह महत्वपूर्ण तत्व है जिसके द्वारा किसी भी रचना के सार्थक अनुभवों की पहचान की जा सकती है।

विवेच्य उपन्यास में सीधी, यथार्थपरक भाषा के साथ-साथ व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग अधिक मात्रा में हुआ है। हर स्थान पर मुहावरें, कहावतों से युक्त भाषा का प्रयोग करके अपनी भाषिक संपन्नता का परिचय लेखक ने दिया है। 'परिशिष्ट' में

---

1. डॉ.भाऊसाहेब परदेशी - राजेंद्र अवस्थी का कथासाहित्य, पृष्ठ - 227

दलित जीवन एवं विषाक्त शिक्षा व्यवस्था को अभिव्यक्त करने के लिए ग्रामीण तथा सुशिक्षित वर्ग की भाषा का उपयोग किया है।

6.2 शब्द प्रयोग के विविध के रूप :

प्रस्तुत उपन्यास में भाषा प्रयोग संबंधी विविधता दृष्टिगोचर होती है। शब्दों के विविध स्वरूपों का विधान, भाषा में सौंदर्य लाने के लिए विविध उपकरणों का प्रयोग, मुहावरों, कहावतों की कलात्मक योजना तथा भाषा की युगानुरूप अभिव्यक्ति आदि के कारण 'परिशिष्ट' उपन्यास की भाषा में सहजता और सौंदर्य परिलक्षित होता है। गिरिराज किशोर की भाषा में अरबी, फारसी और अंग्रेजी शब्दों की भरमार है। उन्होंने खड़ी बोली हिंदी के साथ ही देशी, विदेशी स्त्रोतों से विविध प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया है।

6.2.1 तत्सम शब्द :

'तत्सम' से 'तत्' का अर्थ है 'वह' अर्थात संस्कृत और 'सम' का अर्थ है 'समान' अर्थात तत्सम उन शब्दों को कहते हैं जो संस्कृत के समान हो। संस्कृत भाषा के शब्दों को ज्यों का त्यों स्वीकारणा ही 'तत्सम' कहलाता है। गिरिराज किशोर 'परिशिष्ट' उपन्यास में मनुष्य जीवन की विविधता और व्यापकता का चित्रण हुआ है। पात्रों की स्थिति के अनुसार भाषा प्रयोग ही उपन्यासकार की विशेषता रही है। लेखक ने पात्रानुकूल तत्सम शब्दों का प्रयोग किया हैं, जिसमें भावों की पूर्ण अभिव्यक्ति और बोधगम्यता दृष्टिगोचर होती है।

प्रस्तुत उपन्यास में प्रयुक्त कुछ तत्सम शब्द निम्नुसार -

'आकांक्षा'[1], 'पूजा'[2], 'नाम'[3], 'भगवान'[4], 'प्रेम'[5], 'भविष्य'[6], 'परिवर्तन'[7],

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 10
2. वही - पृष्ठ - 11
3. वही - पृष्ठ - 14
4. वही - पृष्ठ - 16
5. वही - पृष्ठ - 12
6. वही - पृष्ठ - 19
7. वही - पृष्ठ - 19

'भाग्य'[1], 'संसद'[2], 'पानी'[3], 'धर्म'[4], 'संस्कार'[5], 'अग्नि'[6], 'आकाश'[7], 'आत्मा'[8], 'प्रकृति'[9], 'चित्त'[10], 'शुचि'[11], 'उन्मुक्त'[12], 'गन्तव्य'[13], 'मुग्ध'[14] आदि।

भाषा को सहज प्रभावित करनेवाले उपर्युक्त शब्द हिंदी में घुल-मिल गए हैं। यह शब्द प्रस्तुत उपन्यास में सहज रूप से प्रस्तुत हुए हैं।

6.2.2 तद्भव शब्द :

तद्भव शब्द संस्कृत या तत्सम शब्दों के विकृत रूप को कहा जाता है। इन शब्दों के रूपों में परिवर्तन आ गया है। भाषा में स्वाभाविकता लाने के लिए तत्सम शब्दों के साथ-साथ तद्भव शब्दों का प्रयोग भी होता है। ऐसे शब्दों के प्रयोग से गिरिराज किशोर के 'परिशिष्ट' उपन्यास की भाषा जनजीवन की भाषा बन गई है।

प्रस्तुत रचना में निम्नुसार तदभ्व शब्दों का प्रयोग हुआ है-

'पिता'[15], 'मुँह'[16], 'बहन'[17], 'पहला'[18], 'आँख'[19], 'हाथ'[20], 'दूध'[21], 'गाँव'[22], आग'[23], 'नींद'[24], 'घर'[25], 'खेत'[26], 'प्यार'[27], 'माता'[28] आदि।

लेखक ने तद्भव शब्दों का प्रयोग बड़े ही स्वाभविक ढंग से किया है।

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 10
2. वही - पृष्ठ - 17
3. वही - पृष्ठ - 25
4. वही - पृष्ठ - 30
5. वही - पृष्ठ - 31
6. वही - पृष्ठ - 33
7. वही - पृष्ठ - 163
8. वही - पृष्ठ - 207
9. वही - पृष्ठ - 287
10. वही - पृष्ठ - 18
11. वही - पृष्ठ - 21
12. वही - पृष्ठ - 7
13. वही - पृष्ठ - 72
14. वही - पृष्ठ - 86
15. वही - पृष्ठ - 10
16. वही - पृष्ठ - 11
17. वही - पृष्ठ - 11
18. वही - पृष्ठ - 11
19. वही - पृष्ठ - 25
20. वही - पृष्ठ - 29
21. वही - पृष्ठ - 218
22. वही - पृष्ठ - 16
23. वही - पृष्ठ - 211
24. वही - पृष्ठ -64
25. वही - पृष्ठ - 211
26. वही - पृष्ठ - 210
27. वही - पृष्ठ - 41
28. वही - पृष्ठ - 16

6.2.3 देशज शब्द :

प्रस्तुत उपन्यास में दलित जीवन की समस्याओं को वाणी दी है। अत: लेखक ने अनेक स्थानों पर देशज शब्दों का प्रयोग करके भाषा को प्रभवी बनाया है। 'बिस्तर'[1], 'कन्धे'[2], 'शाम'[3], 'जूता'[4], 'धोती'[5], 'बीमार'[6], 'जंगल'[7], 'लौकी'[8], 'पेड'[9], 'कीचड़'[10], 'महिला'[11], 'पत्थर'[12], 'मतलब'[13], 'पंडित'[14], 'चूहा'[15], 'गुंडा'[16] आदि।

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 23
2. वही - पृष्ठ - 33
3. वही - पृष्ठ - 34
4. वही - पृष्ठ - 33
5. वही - पृष्ठ - 67
6. वही - पृष्ठ - 205
7. वही - पृष्ठ - 216
8. वही - पृष्ठ - 102
9. वही - पृष्ठ - 227
10. वही - पृष्ठ - 205
11. वही - पृष्ठ - 152
12. वही - पृष्ठ - 248
13. वही - पृष्ठ - 232
14. वही - पृष्ठ - 42
15. वही - पृष्ठ - 115
16. वही - पृष्ठ - 268

6.2.4 विदेशी शब्द :

विदेशी शब्द का मूल अर्थ है अन्य देश की भाषा से आए हुऐ शब्द। उन्हें 'आगत' शब्द या 'गृहित' शब्द कहा जाता है। हिंदी में अनेक भाषा के शब्द घुलमिल गए हैं। उर्दू, अरबी, फारसी, अंग्रेजी भाषा का प्रयोग कई भारतीय भाषाओं में हो रहा है। प्रस्तुत उपन्यास में गिरिराज किशोर ने इन भाषा शब्दों का प्रयोग स्वाभाविकता से किया है। लेखक का बचपन सामंती संस्कारों में बीता हुआ है। उसके परिणामस्वरूप उपन्यास में इन शब्दों का खुलकर प्रयोग मिलता है।

6.2.4.1 अरबी शब्द :

विवेच्य उपन्यास में अरबी शब्दों का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में हुआ है। विवेच्य उपन्यास में प्रयुक्त अरबी शब्द निम्नुसार-

'बकाया'[1], 'कतरात'[2], 'मशवरा'[3], 'लुआब'[4], 'अक्सर'[5], 'अजायबघर'[6], 'अजीबियत'[7], 'इसरार'[8], 'तहकीकात'[9], 'मोहताज'[10], 'अलामत'[11], 'नासूर'[12], 'फितरत'[13], 'वहम'[14], 'इम्तहान'[15], 'जनाब'[16], 'हाकिम'[17], 'नजारत'[18], 'मुलजिम'[19] 'हरूफ'[20], हकीकी[21], मुगलाते'[22], तहत[23], रसूख[24], उम्दा[25]आदि।

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 11
2. वही - पृष्ठ - 14
3. वही - पृष्ठ - 17
4. वही - पृष्ठ - 20
5. वही - पृष्ठ - 19
6. वही - पृष्ठ - 22
7. वही - पृष्ठ - 22
8. वही - पृष्ठ - 22
9. वही - पृष्ठ - 24
10. वही - पृष्ठ - 35
11. वही - पृष्ठ - 36
12. वही - पृष्ठ - 38
13. वही - पृष्ठ - 45
14. वही - पृष्ठ - 65
15. वही - पृष्ठ - 71
16. वही - पृष्ठ - 73
17. वही - पृष्ठ - 74
18. वही - पृष्ठ - 76
19. वही - पृष्ठ - 78
20. वही - पृष्ठ - 86
21. वही - पृष्ठ - 88
22. वही - पृष्ठ - 88
23. वही - पृष्ठ - 89
24. वही - पृष्ठ -90
25. वही - पृष्ठ - 90

6.2.4.2 फारसी शब्द : :-.

'बालिस्त'[1], 'परवाज'[2], 'संजीदा'[3], 'खिदमत'[4], 'तनख्वाह'[5], 'दरख्त'[6], 'गुस्ताखी'[7], 'खैरख्वाह'[8], 'दिल'[9], 'मायूसी'[10], 'तहमद'[11], 'दस्तखत'[12], 'नुमायश'[13], 'सख्त'[14], 'ख्याल'[15], 'कमबख्त'[16], 'नौबत'[17], 'लाश'[18], 'आराम'[19], 'शिकार'[20], 'पेशाब'[21] आदि।

इस प्रकार विवेच्य उपन्यास में फारसी शब्द पर्याप्त मात्रा में दिखाई देते हैं।

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 9
2. वही - पृष्ठ - 9
3. वही - पृष्ठ - 13
4. वही - पृष्ठ - 13
5. वही - पृष्ठ - 15
6. वही - पृष्ठ - 22
7. वही - पृष्ठ - 23
8. वही - पृष्ठ - 29
9. वही - पृष्ठ - 11
10. वही - पृष्ठ - 54
11. वही - पृष्ठ - 67
12. वही - पृष्ठ - 74
13. वही - पृष्ठ - 85
14. वही - पृष्ठ - 87
15. वही - पृष्ठ - 96
16. वही - पृष्ठ - 102
17. वही - पृष्ठ - 104
18. वही - पृष्ठ - 121
19. वही - पृष्ठ - 185
20. वही - पृष्ठ - 228
21. वही - पृष्ठ - 229

6.2.4.3 अंग्रेजी शब्द -

गिरिराज किशोर ने प्रस्तुत उपन्यास में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त उच्चस्तरीय शिक्षा संस्थान आई. आई. टी. का चित्रण किया है। वहाँ के शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है। आई. आई. टी. में शिक्षा प्राप्त करनेवाले ज्यादातर छात्र कान्व्हेंट स्कूलों से आते हैं। अत: अनिवार्य रूप से 'परिशिष्ट' उपन्यास में अंग्रेजी शब्दों का अधिक्य है।

'क्लिप-टॉप'[1], 'फैक्ट्री'[2], 'इन्जीनियर'[3], 'लॉन'[4], 'फोरमैन'[5], 'स्टेशन'[6], प्लेटफार्म[7],'साउथ'[8], 'ऐवन्यू'[9], 'कण्डक्टर'[10], 'इन्क्वारी'[11], 'कैम्प'[12], 'ड्रायव्हर'[13], 'क्वार्टर'[14], 'रिहर्सल'[15], 'मिनट'[16], 'सिमेण्ट'[17], 'प्लाण्ट'[18], 'मिनिस्टर'[19], 'वोट'[20], 'कैण्टीन'[21], 'पार्टी'[22], 'पब्लिक'[23], 'फाइनल'[24], 'रिपोर्ट'[25], 'डेपुटेशन'[26], 'ट्रेन'[27], 'लेट'-[28], 'हाईस्कूल'[29], 'एडामिनिस्ट्रेटर'[30] आदि।

इस प्रकार विवेच्य उपन्यास में अंग्रेजी शब्दों का खुलकर प्रयोग हुआ है।

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 10
2. वही - पृष्ठ - 11
3. वही - पृष्ठ - 15
4. वही - पृष्ठ - 15
5. वही - पृष्ठ - 17
6. वही - पृष्ठ - 21
7. वही - पृष्ठ - 23
8. वही - पृष्ठ - 23
9. वही - पृष्ठ - 23
10. वही - पृष्ठ - 24
11. वही - पृष्ठ - 25
12. वही - पृष्ठ - 25
13. वही - पृष्ठ - 26
14. वही - पृष्ठ - 28
15. वही - पृष्ठ - 28
16. वही - पृष्ठ - 33
17. वही - पृष्ठ - 35
18. वही - पृष्ठ - 35
19. वही - पृष्ठ - 35
20. वही - पृष्ठ - 35
21. वही - पृष्ठ - 40
22. वही - पृष्ठ - 44
23. वही - पृष्ठ - 45
24. वही - पृष्ठ - 45
25. वही - पृष्ठ - 45
26. वही - पृष्ठ - 48
27. वही - पृष्ठ - 48
28. वही - पृष्ठ - 48
29. वही - पृष्ठ - 50
30. वही - पृष्ठ - 57

6.2.4.4 उर्दू के शब्द :

उर्दू के निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग हुआ है।

पुश्तैनी[1], अक्सर[2], मौका[3], सरकार[4], सिपाही[5], मर्जी[6], लिफाफा[7] आदि।

6.2.4.5 तुर्की शब्द :

तलाश[8], चम्मच[9], लाश[10], दरोगा[11] आदि

अत: स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत उपन्यास में संस्कृत, अंग्रेजी, अरबी, तथा फारसी शब्दों का प्रयोग अधिकांश मात्रा में बड़ी सहजतासे मिलता है। इन शब्दों के कारण 'परिशिष्ट' में सरलता, सहजता, और कलात्मकता परिलक्षित होती है।

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 13
2. वही - पृष्ठ - 19
3. वही - पृष्ठ - 60
4. वही - पृष्ठ - 92
5. वही - पृष्ठ - 123
6. वही - पृष्ठ - 133
7. वही - पृष्ठ - 276
8. वही - पृष्ठ - 30
9. वही - पृष्ठ - 119
10. वही - पृष्ठ - 130
11. वही - पृष्ठ - 123

6.2.5 शब्द युग्मों का प्रयोग :

आधुनिक कालीन उपन्यासों में शब्द-युग्मों का अत्याधिक प्रयोग होता है। शब्द का अर्थ है- 'सार्थक ध्वनि' और युग्म का अर्थ हुआ- 'सार्थक ध्वनियों की संगतियाँ या जोड़ियाँ'। प्रस्तुत उपन्यास में सार्थक-निरर्थक शब्दों की भरमार हैं।

6.2.5.1 संयुक्त शब्द :

'क्लिप-टॉप'[1], 'संकट-मोचन'[2], 'एक-दूसरे'[3], 'माता-पिता'[4], 'भक्ति-पथ'[5], 'छोटे-मोटे'[6], 'बोलने-बतियाने'[7], 'बेटा-बेटी'[8], 'दीया-बत्ती'[9], 'पढ़ी-लिखी'[10], 'जान-पहचान'[11], 'सही-सलामत'[12], 'दया-माया'[13], 'बहू-बेटी'[14], 'सूझ-बूझ'[15], 'सोच-सोचकर'[16], 'अन्दर-बाहर'[17] , 'मॉ-बाप'[18], 'जन्म-जन्मानंतर'[19], 'उलट-पुलटकर'[20], आदि।

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 10
2. वही - पृष्ठ - 11
3. वही - पृष्ठ - 14
4. वही - पृष्ठ - 16
5. वही - पृष्ठ - 17
6. वही - पृष्ठ - 17
7. वही - पृष्ठ - 17
8. वही - पृष्ठ - 18
9. वही - पृष्ठ - 18
10. वही - पृष्ठ - 11
11. वही - पृष्ठ - 11
12. वही - पृष्ठ - 27
13. वही - पृष्ठ - 29
14. वही - पृष्ठ - 37
15. वही - पृष्ठ - 92
16. वही - पृष्ठ - 104
17. वही - पृष्ठ - 107
18. वही - पृष्ठ - 107
19. वही - पृष्ठ - 109
20. वही - पृष्ठ - 115

6.2.5.2 समान संयुक्त शब्द :

इसमें दो शब्द एक साथ जुड़कर आते हैं - **जैसे** -

'नयी-नयी'[1], 'पहुँचते-पहुँचते'[2], 'दिप-दिप'[3], 'खट-खट'[4], 'आगे-आगे'[5], 'बीच-बीच'[6], 'बार-बार'[7], 'बड़े-बड़े'[8], 'बारी-बारी'[9], 'खड़े-खड़े'[10], 'जल्दी-जल्दी'[11], 'कदम-कदम'[12], 'धीरे-धीरे'[13], 'अजीब-अजीब' [14], 'खरामा-खरामा'[15] आदि।

2.5.3 सार्थक-निरर्थक शब्द -

इसमें पहला शब्द सार्थक और दूसरा व्यर्थ या निरर्थक रहता है। **जैसे** -

'आफाओं-जफाओं'[16], 'बचा-खुचा'[17], 'टूटा-फूटा'[18], 'चेहरे-मोहरे'[19], 'धोंता-पोछता'[20], 'जादू-टोना'[21], 'आनन-फानन'[22], 'सोच-सुचव्वल'[23], 'हिन्दी-पिन्दी'[24], 'चिकनी-चुपड़ी'[25], 'धुली-पुछी'[26], 'कमीज-वमीज'[27], 'खन्ना-वन्ना'[28], 'लहीम-शहीम'[29], 'बीमारी-सीमारी'[30] आदि।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने शब्द युग्मों का सहज और स्वाभाविक प्रयोग किया दृष्टिगोचर होता हैं। इससे उपन्यास के पात्र जीवंत और यथार्थ परिलक्षित होते हैं।

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 16
2. वही - पृष्ठ - 18
3. वही - पृष्ठ - 20
4. वही - पृष्ठ - 24
5. वही - पृष्ठ - 26
6. वही - पृष्ठ - 26
7. वही - पृष्ठ - 21
8. वही - पृष्ठ - 27
9. वही - पृष्ठ - 27
10. वही - पृष्ठ - 31
11. वही - पृष्ठ - 33
12. वही - पृष्ठ - 36
13. वही - पृष्ठ - 67
14. वही - पृष्ठ - 104
15. वही - पृष्ठ - 120
16. वही - पृष्ठ - 12
17. वही - पृष्ठ - 18
18. वही - पृष्ठ - 20
19. वही - पृष्ठ - 20
20. वही - पृष्ठ - 26
21. वही - पृष्ठ - 28
22. वही - पृष्ठ - 41
23. वही - पृष्ठ - 104
24. वही - पृष्ठ - 108
25. वही - पृष्ठ - 121
26. वही - पृष्ठ - 121
27. वही - पृष्ठ - 123
28. वही - पृष्ठ - 223
29. वही - पृष्ठ - 223
30. वही - पृष्ठ - 124

6.2.6 मुहावरे :

उपन्यास हो या कहानी भाषा को सजीव और प्रभावशाली बनाने के लिए मुहावरों का प्रयोग किया जाता है। मुहावरों के प्रयोग से भाषा प्रवाहपूर्ण बनती है। विषय को सफल बनाने के लिए प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने अनेक मुहावरों का सार्थक प्रयोग किया है।

'परिशिष्ट' उपन्यास में निम्न मुहावरों का सार्थक प्रयोग मिलता - "आँख फैली-की-फैली रह जाना"[1], "नाक फूल जाना"[2], "बिन बादल बरसात कराना"[3], "जी का जंजाल होना"[4] , "टिकटिका लगा देना"[5] , "खून बहाना"[6], "घूँटी में पीना"[7] , "मौका ताडे रहना"[8], "लहलहा उठना"[9], "नाम रोशन करना"[10] आदि।

अत: स्पष्ट है कि गिरिराज किशोर ने 'परिशिष्ट' उपन्यास में मुहावरों का पर्याप्त प्रयोग किया है। उनकी भाषा मुहावरेदार है। मुहावरों का यथास्थान सार्थक प्रयोग करके लेखक ने अपने भाषा सौंदर्य को गरिमा प्रदान की है।

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 23
2. वही - पृष्ठ - 33
3. वही - पृष्ठ - 35
4. वही - पृष्ठ - 38
5. वही - पृष्ठ - 39
6. वही - पृष्ठ - 39
7. वही - पृष्ठ - 47
8. वही - पृष्ठ - 60
9. वही - पृष्ठ - 60
10. वही - पृष्ठ - 63

6.2.7 कहावते (लोकोक्तियाँ)

कहावतों के प्रयोग से गिरिराज किशोर की भाषा में चार-चाँद लग गए है। "अपनी बातों की पुष्टि हेतु कहावतों को प्रयोग में लाया जाता है। जीवन की वास्तविकता के साथ इसका संबंध होता है। कहावते संक्षिप्त, सारगर्भित एवं लोकप्रिय होते हैं। लोक उसे अपनी मानते है, इसलिए वह लोकोक्ति कहलाती है।"[1]

'परिशिष्ट' उपन्यास में प्रयुक्त कहावते निम्नुसार है- "रेल चढ़ा मरद और देहली लाँघी औरत की कौन परतीत ?"[2], "सब धान बाइस पसेरी"[3], "अक्ल भैंस के पास दूध पीने के लिए छोड़ देना"[4], "जान ना पहचान खालाजी सलाम"[5], "धेले का सलाम और लाखों का काम"[6], "हरि अनन्त हरि कथा अनन्त"[7]

इस प्रकार कहावतों के प्रयोग से 'परिशिष्ट' उपन्यास में यथार्थता के साथ भाषिक सौंदर्य परिलक्षित होता है।

---

1. डॉ.सुरेश साळुंखे - गिरिराज किशोर का उपन्यास साहित्य ः एक अनुशीलन, पृष्ठ - 224
2. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 15
3. वही - पृष्ठ - 74
4. वही - पृष्ठ - 75
5. वही - पृष्ठ - 75
6. वही - पृष्ठ - 75
7. वही - पृष्ठ - 210

6.2.8 सूक्तियाँ :

"सूक्ति का अर्थ है - सुंदर उक्ति। यह अच्छे और सुंदर ढंग से कही हुई कोई बढ़ियाँ बात है।"[1] गिरिराज किशोर ने अपने जीवनानुभवों को ही अपने साहित्य द्वारा अभिव्यक्ति दी है। उनके संघर्षमय जीवन से प्राप्त अच्छे-बुरे अनुभव 'परिशिष्ट' उपन्यास में सूक्तियों के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं।

"छोटी चिड़िया की और चीजें चाहे छोटी पर दिल बड़ा होता है। चोंच के दाने तक गाने की मस्ती में बखेर देती है।"[2]

"आजकल तो जो रोटी को और मोटा कर दे वही सब कुछ है।"[3],

"बड़े आदमी तो सब हो जाते हैं पर भला होना मुश्किल है।"[4]

"हम मन की शान्ति को छोड़कर तन की शान्ति की तरफ दौड़ रहे हैं।"[5]

"दूसरा कोई किसी की इज्जत या बेइज्जत नहीं करता हम खुद ही इज्जत कराते हैं और खुद ही बेइज्जती।"[6]

"बेइज्जत मार से कम बात से ज्यादा होती है।"[7]

"मन की हार से बड़ी कोई हार नहीं होती।"[8]

"जीवन में अच्छे अवसर मुश्किल से आते हैं। जो समय पर पकड़ ले वही भाग्यवान।"[9]

अत: स्पष्ट है कि प्रस्तुत उपन्यास में सूक्तियों के द्वारा पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं को स्पष्ट किया है। साथ ही सूक्तियों के प्रयोग से भाषा को प्रभावशाली बनाने में सहायता हुई है।

---

1. डॉ.सुरेश साळुंखे - गिरिराज किशोर का उपन्यास साहित्य : एक अनुशीलन, पृष्ठ - 224
2. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 11
3. वही - पृष्ठ - 14
4. वही - पृष्ठ - 23
5. वही - पृष्ठ - 29
6. वही - पृष्ठ - 30
7. वही - पृष्ठ - 243
8. वही - पृष्ठ - 52
9. वही - पृष्ठ - 93

6.2. 9 अपशब्द (गालियाँ)

साहित्य में अपशब्द अवांछित होते हैं, किंतु कभी-कभी पात्रानुकूल भाषा के प्रयोग में ऐसे शब्द आवश्यक रूप में आते हैं। विशिष्ट सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक परिस्थिति में कथावस्तु का आभास दिलाने के लिए तथा पात्रों की विशिष्ट मनोवृत्ति को उजागर करने के लिए ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

उपन्यासकार गिरिराज किशोर ने भी कुछ अपशब्दों का प्रयोग अपने 'परिशिष्ट' उपन्यास में किया है।

जैसे - 'नाख्वान्दा'[1], 'बदजात कही के'[2], 'साले जलते हैं'[3], 'साले झूट्ठे'[4], 'साला, हरामजादा'[5] आदि ।

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 12
2. वही - पृष्ठ - 19
3. वही - पृष्ठ - 19
4. वही - पृष्ठ - 61
5. वही - पृष्ठ - 123

6.3 शैली

6.3.1 शैली का स्वरूप :

साहित्यकार जिस प्रकार से अपने भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति साहित्य में प्रकट करता है उसी को शैली कहते हैं। विश्व साहित्य में शैली का महत्त्व अक्षुण्ण रहा है। संस्कृत विद्वानों ने रीति को शैली कहा है। आचार्य वामन ने 'काव्यालंकार सूत्र' में रीति का विश्लेषण करते हुए 'विशिष्ट पद रचना' कहा है। आधुनिक काल में रीति शब्द अंग्रेजी के Style (स्टाईल) का पर्याय मान लिया है। प्रत्येक साहित्यकार प्रयत्नशील रहता है कि उसकी लेखन शैली में नवीनता और मौलिकता का समावेश हो। एक ही शैली के प्रयोग से पाठकों के मन में अरुचि पैदा हो सकती है। इसी को ध्यान में रखते हुए साहित्य की शैली में विविध प्रकार के नए-नए प्रयोग किए गए है। बीसवीं सदी के सातवें, आठवें, नववें एवं अंतिम दशक के उपन्यासों में शैली की दृष्टि से अनेक प्रकार के परिवर्तन देखने को मिलते है।

'परिशिष्ट' उपन्यास में गिरिराज किशोर ने पत्रशैली के साथ अनेक शैलियों का प्रयोग अनूठे ढंग से किया है। प्रस्तुत उपन्यास में दलित जीवन तथा विषाक्त शिक्षा व्यवस्था का चित्रण करने के लिए पत्रशैली का उपयोग किया है। साथ ही मनोविश्लेषणात्मक, व्यंग्यात्मक, आत्मकथनात्मक, वर्णनात्मक, स्वप्नशैली, पूर्वदीप्ति शैली, संवाद और टैलीफोन शैली का प्रभावात्मकता से प्रयोग हुआ है जो सफल और प्रसंगानुकूल सुयोग्य है।

6.3.1.1 पत्रात्मक शैली :

पत्रात्मक शैली में पात्र पत्र के माध्यम से अपनी भावभिव्यक्ति को प्रस्तुत करते हैं। इसमें पत्रोत्तरों के आधार पर कथा का विकास, पात्रों का चरित्र-चित्रण किया जाता है। पात्रों की व्यथा, उदासी, भावुकता आदि को व्यक्त करने के लिए यह शैली उपयुक्त होती है। इससे पात्रों के मन के भावतरंगों का पता चलता है। प्रस्तुत उपन्यास में इस शैली का सुंदर प्रयोग हुआ है -

SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

बावनराम चौधरी द्वारा पुत्र अनुकूल को लिखे पत्र का एक उद्धरण -

"प्यारे बेटे अनुकूल,

तुम्हारी माँ तुम्हें रात-दिन याद करती है। कल बारिश हुई तो वह उठकर बैठ गयी।------ माँ की ममता तम्बू थोड़ा ही है ----। पर उसे कौन समझाये ?"[1]

यहाँ अनुकूल की याद में उसकी माँ की अवस्था का यथार्थ वर्णन परिलक्षित होता है।

रामउजागर द्वारा अनुकूल को लिखे पत्र में दलितों की वास्तविक स्थिति उद्घाटित होती है -

"मैंने शायद वैसा ही कुछ करना चाहा जो राम के युग में एक शूद्र ने तपस्या करके किया था। अपने युग की अभिजात्यता का मुँह चिढ़ाने के अपने खतरे होते हैं। वैसे जब भी ऐसा होता है तभी उसके अन्जाम सामने आते हैं।"[2]

अत: स्पष्ट है कि 'परिशिष्ट' उपन्यास में पत्रात्मक शैली का अधिक्य रहा है। इस शैली द्वारा दलितों के वास्तविक जीवन के उद्घाटन के साथ ही अनुकूल, रामउजागर आदि पात्रों के संघर्षशील जीवन को उद्घाटित किया है।

6.3.1.2 मनोविश्लेषणात्मक शैली :

यह शैली मनोवैज्ञानिक तत्वों पर आधारित होती है। इसके अंतर्गत मन के विश्लेषण को प्रधानता से अभिव्यक्त किया जाता है। पात्रों की आंतरिक स्थितियों को शब्दबद्ध करने के लिए इस शैली का प्रयोग किया जाता है। साथ ही पात्रों की विविध मन:स्थितियों का चित्रण लेखक करता है। प्रस्तुत उपन्यास में गिरिराज किशोर ने मनोविश्लेषणात्मक शैली का यथास्थान प्रयोग किया है।

'परिशिष्ट' उपन्यास का प्रमुख पात्र रामउजागर का मानसिक संतुलन खो जाने पर अन्य छात्र की टिपणियाँ प्रस्तुत है-

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 105
2. वही - पृष्ठ - 157

"कभी-कभी जब कोई व्यक्ति किसी की म्यूटिलेटेड़ बॉड़ी देखता है तो उसमें उसे अपनी बॉड़ी नजर आने लगती है। यह साइकोलाजिकल फिनोमिना है।"[1]

मोहन की लाश उतरते समय रामउजागर की स्थिति - "जैसे-जैसे लाश नीचे आयी रामउजागर को अजीब-अजीब तरह की अनुभूतियाँ होने लगीं। उसे लगा --- दाँत खुल गये हैं और वह हँस रहा है। आँखो पर ढकी उसकी पलके मिचमिचाती - सा लगी।"[2]

निष्कर्षत: कहना गलत नहीं होगा कि प्रस्तुत उपन्यास में मनोविश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग सफलता से हुआ है।

6.3.1.3 व्यंग्यात्मक शैली :

जीवन की विसंगतियों की यथार्थ अभिव्यक्ति के लिए व्यंग्य एक प्रभावशाली माध्यम है। जो विचार संवादात्मकता द्वारा प्रभावी नहीं हो सकता वह व्यंग्यात्मक शैली द्वारा प्रभावपूर्ण बन जाता है। इस शैली में साहित्यकार व्यंग्य के सहारे सामाजिक अव्यवस्था और रूढ़ियों पर प्रहार करता है। प्रस्तुत उपन्यास में गिरिराज किशोर ने व्यंग्यात्मक शैली का औचित्यपूर्ण प्रयोग किया है।

"मैल तो सबके शरीर से एक-सा ही निकलता है...ऐसा नहीं की आप ऊँची जात के हैं तो आपके शरीर से कुछ भिन्न प्रकार का निकलता हो। आप सोते हुए कुछ अलग तरह साँस लेते हो...!"[3] प्रस्तुत कथन में लेखक ने जातीयता पर व्यंग्य किया है।

राजनीतिक नेताओं पर व्यंग्य -

"साब आजकल के ये- एम. पी. भी बस कण्ड़क्टरों से कम नहीं हैं। बात का सीधा जवाब नहीं देंगे। आपको उतारना कहीं है, पहुँचा कहीं और देंगे। आप कुछ कहेंगे तो फिर आपको दुगना दौड़ा देंगे।"[4] अत: स्पष्ट है कि लेखक ने व्यंग्यात्मक शैली द्वारा राजनीति, जातीय भेदाभेद आदि विषयों पर करारा व्यंग्य किया है।

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 127
2. वही - पृष्ठ - 124
3. वही - पृष्ठ - 68
4. वही - पृष्ठ - 25

6.3.1.4. आत्मकथनात्मक शैली -

इस शैली को 'मैं' शैली भी कहा जाता है। आत्मकथनात्मक शैली में प्रथम पुरुष में निवेदन प्रस्तुत किया जाता है। इस शैली में पात्र अपने बारे में जो कुछ कहता है, उसे आत्मकथनात्मक शैली के तहत रखा जाता है।

'परिशिष्ट' उपन्यास में आत्मकथनात्मक शैली का प्रयोग किया हुआ दिखाई देता है-

"अब तो मैं एकदम खुले में हूँ। इस बात ने मुझे कम समय में बौद्धिक रूप से विकसित कर दिया कि मैं स्वयं आश्चर्य में हूँ। मुझे अपने ही अंदर अपनी आत्मसुरक्षा का आदर्श तैयार करना पड़ता है।"[1]

"मैं ही तुम्हे लायी थी और में ही तुम्हे वहाँ छोड़कर यहाँ चली आयी। मैं समझती हूँ कि तुम्हारे बापू को भी तुम्हारे साथ ऐसा ही करना चाहिए।"[2]

इस तरह प्रस्तुत उपन्यास में आत्मकथनात्मक शैली का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में दिखाई देता है।

6.3.1.5 वर्णनात्मक शैली -

उपन्यास लेखन में वर्णनात्मक शैली सर्वाधिक प्रचलित और सुविधाजनक होती है। इसमें किसी दृश्य का, घटना का या पात्रों के स्वभावधर्म का वर्णन किया जाता है। इस शैली में उपन्यासकार का स्थान एक कथाकार का हो जाता है। जो कथा का वर्णन करता चला जाता है -

"अनुकूल चाय की दुकान के पास बैठा, खोमचेवाले से मुरमुरे खरीदकर और चाय में भिगोकर खा रहा था। बावनराव खा चुके थे। इस रूप में मुरमुरे खाना बाप-बेटे दोनों को अच्छा लगता था। बीच-बीच में वह सड़क पर भी देख लेता था। बस, मोटर, स्कूटर वगैरह सामने दिखते नजारों के बीच चीरते हुए निकल जाते थे।...

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 129
2. वही - पृष्ठ - 241

उसने सड़क के किनारे खड़े होकर दोनों तरफ देखा। बहुत कम लोग आ-जा रहे थे। यहाँ आदमी कम हैं, मोटरें ज्यादा हैं। इसलिए मोटरें और फिटफिटये चलती हैं। सड़के देखकर आदमी नहीं लगते, बसें देखकर अलबत्ता लगते हैं।"[1]

अत: स्पष्ट है कि प्रस्तुत उपन्यास में वर्णनात्मक शैली प्रचुर मात्रा में दिखाई देती है।

6.3.1.6 स्वप्नशैली :

लेखक अपनी रचना में किसी पात्र के स्वप्नावस्था के प्रसंगो को कथावस्तु में अंकित करता है तो उसे स्वप्नशैली कहते हैं। पात्रों की आंतरिक भावना, इच्छा और दमित वासना आदि को लेखक स्वप्नशैली द्वारा अभिव्यक्त करता है। प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से गिरिराज किशोर ने स्वप्नशैली को प्रस्तुत किया है- इसमें बावनराम और अनुकूल की माँ के स्वप्न देखना स्वप्नशैली के ही उदाहरण है।

अनुकूल की माँ को दिखाई देनेवाला स्वप्न -

"किसी बियाबन जंगल में वह अकेली जा रही है। अचानक भटक जाती है। उस जंगल में बड़े-बड़े दरिया हैं, पहाड़ हैं... साँय-साँय करके हवा चल रही होती है। उसकी समझ में नहीं आता कि किधर जाय। अचानक एक पहाड़ पर अनुकूल खड़ा दिखायी पड़ता है। वह उसकी तरफ 'अनुकूल-अनुकूल' चिल्लाती अन्धाधुन्ध दौड़ती है। थोड़ी दूर तक तो अनुकूल दिखायी देता रहता है, फिर अन्तर्ध्यान हो जाता है। वह बोलना चाहती है पर बोल नहीं पाती-तभी अचानक उसकी आँख खुल जाती है।"[2] अत: स्पष्ट है प्रस्तुत उपन्यास में स्वप्नशैली का भी प्रयोग पर्याप्त मात्रा में मिलता है।

6.3.1.7 पूर्वदीप्ति -

पूर्वदीप्ति शैली में पात्र उन घटनांओं को व्यक्त करता है जो घटित हुयी हैं। इस संदर्भ में डॉ. त्रिभुवन सिंह लिखते हैं - " इसमें उपन्यासकार चरित्र से संबंधित

---

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - 46-47
2. वही - पृष्ठ - 162

उन घटनाओं को ही प्रस्तुत करता है जिनके संबंध में वह संदर्भ विशेष में अथवा घटना विशेष के कारण सोचने जाता है। वे वास्तविक घटनाएँ होती है और चरित्र के जीवन में घटी होती है। निश्चित रूप से वह घटनाएँ अतीत की ही होती हैं। फ्लैश का अर्थ होता है प्रकाश और बैक का अर्थ होता है पीछे।'फ्लैश बैक' अथवा पिछले जीवन को प्रकाशित करना।"[1] अत: फ्लैश बैक या पूर्वदीप्ति शैली में अतीत की घटनाओं का वर्ण न स्मृति तरंगो के रूप में होता हैं।

जैसे - अनुकूल को याद आता है- "हाईस्कूल का रिजल्ट रात की गाड़ी से आनेवाला था। लड़कों के साथ रिजल्ट देखने वह स्टेशन चला गया था। घर में कितना कोहराम मचा था। बाबू खोजते-खोजते रात में है स्टेशन पहुँचे थे रिजल्ट गड़बड़ आ गया और लड़का कुछ कर बैठा तो कहीं के नहीं रहेंगे। बाबू जब मिलें तो उनका चेहरा फक्क था। देखते ही चिपट गये, जैसे 'बेवकूफी' कर चुकने के बाद भी सही-सलामत मिल गया होऊँ। उस दिन पहली बार लगा की आदमी अपनी प्रिय से प्रिय चीज के नष्ट हो जाने के परिकल्पना के प्रति जल्दी ही आश्वस्त भी हो जाता है। घर आकर वह खूब हँसा था।"[2]

इसी तरह 'परिशिष्ट' उपन्यास में लेखक ने पूर्वदीप्ति शैली का खुबी से प्रयोग किया है।

6.3.1.8 संवाद शैली :-

कथोपकथन अथवा संवाद मूलत: नाटक से संबंधित हैं। उपन्यासकार उपन्यास में चमत्कार एंव कलात्मकता लाने के लिए इस शैली का प्रयोग करता है। गिरिराज किशोर ने विवेच्य उपन्यास में संवाद शैली का पर्याप्त मात्रा में प्रयोग किया दृष्टिगोचर होता है।

---

1. डॉ.त्रिभुवन सिंह - हिंदी उपन्यास शिल्प और प्रयोग, पृष्ठ - 205
2. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - पृष्ठ - 54-55

नीलम्मा तथा रामउजागर की अनपढ़ बहन के बीच शहर की लड़कियों के सदंर्भ में निम्न संवाद दर्शनीय है -

"जब खेत नाहीं तो अनाज कहाँ से आइत है ?

"गाँवो से"

" लड़के-लड़की सब साथ पढ़त हैं ? कुछ नाहीं होत ?

"होना क्या है ?"

" कहित हैं कि आग लागत है।"

"किस में ?"

" ई हमं नाहीं जानित"

"तुमने लगती देखी है ?"

उसने गर्दन हिलाकर इंकार कर दिया। बोलि, "हम पढ़ि नाहीं बा।"

"आंग देखने के लिए तुम्हें पढ़ना चाहिए।"

" लाँछन लगी का ऽऽ ?"

" तुम यह बात अपने भैया से पूछना।"[1]

अत: स्पष्ट है कि प्रस्तुत उपन्यास के संवाद की भाषा प्रसंगानुकूल है। यह संवाद छोटे, सुगठित, चरित्रोंद्घाटन में सहायक सिद्ध होते हैं।

निष्कर्षता उपर्युक्त विवेचन के बाद स्पष्ट होता है कि गिरिराज किशोर ने विभिन्न शैलियों का प्रयोग सहज एवं स्वाभाविक रूप से किया है। अलग-अलग शैलियों के प्रयोग से उपन्यास की कथावस्तु अत्यंत रोचक, गतिशील और यथार्थ बनी है।

6.3.1.9 टेलीफोन शैली :

लेखक अपनी रचना में विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए टेलीफोन का सहारा लेता है तब उस शैली को टेलीफोन शैली कहा जाता है। 'परिशिष्ट' उपन्यास में टेलीफोन शैली का उपयोग हुआ है।

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - पृष्ठ - 211

शोध- छात्रा नीलम्मा ने डीन से फोन पर की बातचीत का अंश

"सुना है अपने अनुकूल के फादर को गेस्ट हाउस में कमरा देने के लिए मना किया है। हम लोगों के पेरेन्ट्स आयेंगे तो कहाँ जायेंगे।"......

... "मैंने सुना है कि वे अपने साथ गुण्ड़ो को लाये हैं... हॉस्टिल-हॉस्टिल घूमते फिर रहे थे। लड़को का पहचनवा रहे थे।"[2]

अत: प्रस्तुत उपन्यास में टेलीफोन शैली का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है।

निष्कर्ष :

मनुष्य भाषा के माध्यम से परस्पर विचार-विनिमय करता है। प्रत्येक रचनाकार भाषा के द्‌वारा ही अपनी साहित्य कृति को अभिव्यक्त करता है। गिरिराज किशोर के 'परिशिष्ट' उपन्यास की भाषा-शैली का मूल्यांकन करने के उपरांत जो तथ्य उजागर हुए हैं वे इस प्रकार है।-

गिरिराज किशोर के 'परिशिष्ट' उपन्यास में संस्कृत के तत्सम एवं तद्‌भव शब्दों का प्रयोग जगह-जगह मिलता है। घर के सामंती वातावरण के कारण विवेच्य उपन्यास में अरबी-फारसी के शब्दों की भरमार है। साथ ही तत्काल में अंग्रजों का संपर्क, आई. आई. टी. कानपुर में उच्च पद पर कार्यरत रहना तथा विदेशी यात्राओं के कारण अंग्रेजी शब्दों की अधिकता नजर आती है। भाषा के विविध प्रयोग विवेच्य उपन्यास में दृष्टिगोचर होते हैं। कहावते, मुहावरे, सूक्तियाँ, अपशब्द तथा गालियाँ आदि का भी प्रयोग पात्रानुकूल, प्रसंगानुकूल तथा यथार्थता से हुआ है। अत: प्रस्तुत उपन्यास में सहजता तथा स्वाभाविकता से भाषा-शैली का प्रयोग परिलक्षित होता हैं।

प्रस्तुत उपन्यास की शैलियों में वैविध्य नजर आता है। विषय के अनुसार विविध शैलियों का प्रयोग परिलक्षित होता है। इसमें पत्रशैली, मनोविश्लेषणात्मक, व्यंग्यात्मक, स्वप्नशैली, आत्मकथनात्मक, वर्णनात्मक, पूर्वदीप्ति, संवाद, टेलीफोन आदि

1. गिरिराज किशोर - परिशिष्ट, पृष्ठ - पृष्ठ - 180

शैलियों का प्रयोग स्पष्टता से परिलक्षित होता है। अत: 'परिशिष्ट' उपन्यास में भाषा-शैली का यथायोग्य प्रयोग दिखाई देता है। विवेच्य उपन्यास में प्राप्त शैलियाँ पाठकों को संबंधित विषय पर सोचने के लिए बाध्य करती है।

अत: स्पष्ट है कि गिरिराज किशोर द्वारा लिखित 'परिशिष्ट' उपन्यास भाषाशैली की दृष्टि से सफल, श्रेष्ठ एवं सराहनीय बन पड़ा है।